Table of Contents

1. लक्ष्मण-मूर्छा और राम का विलाप

लक्ष्मण-मूर्छा और राम का विलाप

यह पाठ रामायण के एक अत्यंत महत्वपूर्ण प्रसंग पर आधारित है जिसमें लक्ष्मण की मूर्छा और राम का विलाप दर्शाया गया है। इस गद्यांश में राम की व्यथा, उनके भावनात्मक विलाप और उनके भाई लक्ष्मण के प्रति गहरा स्नेह स्पष्ट होता है। पाठ में दोहा और सोरठा छंदों के माध्यम से भावों की अभिव्यक्ति की गई है।

मुख्य बिंदु

- लक्ष्मण की मूर्छा का कारण और उसकी स्थिति
- राम का विलाप और उनकी भावुकता
- भाई-भाई के बीच प्रेम, समर्पण और चिंता
- हनुमान की भूमिका और उनकी सहायता
- दोहा और सोरठा छंदों का साहित्यिक महत्व
- शब्द-छवि और भावों की अभिव्यक्ति

पाठ्य प्रमाण / उदाहरण

"तव प्रताप उर राखि प्रभु जैहें नाथ तुरंता। अस कहि आयसु पाइ पद बंदि चलेउ हनुमंता॥"

"सकहु न दुखित देखि मोहि काऊ। बंधु सदा तव मृदुल सुभाऊ॥"

"जैहउँ अवध कवन मुख लाई। नारि हेतु प्रिय भाई गँवाई॥"

हल किए गए उदाहरण

प्रश्न: राम का विलाप किस प्रकार व्यक्त हुआ है?

उत्तर: राम ने अपने भाई लक्ष्मण की मूर्छा पर गहरा दुःख व्यक्त किया है। वे कहते हैं कि उनके बिना उनका जीवन अधूरा है। राम ने अपने भावों को दोहा और सोरठा छंदों में प्रकट किया है, जिसमें उन्होंने अपने भाई के प्रति प्रेम, चिंता और समर्पण को व्यक्त किया है।

अभ्यास प्रश्न

स्तर 1 – सरल

- लक्ष्मण की मूर्छा का कारण क्या था?
- राम ने हनुमान को क्या आदेश दिए?
- दोहा और सोरठा में क्या अंतर है?

स्तर 2 – मध्यम

- राम के विलाप में उनके भावों की क्या विशेषताएँ हैं?
- हनुमान की भूमिका इस प्रसंग में क्या है?
- पाठ में प्रयुक्त कुछ महत्वपूर्ण शब्दों के अर्थ लिखिए।

स्तर 3 – कठिन

- राम और लक्ष्मण के बीच प्रेम और समर्पण का विश्लेषण कीजिए।
- इस गद्यांश में दोहा और सोरठा छंदों का साहित्यिक महत्व समझाइए।
- राम के विलाप से हमें क्या जीवन शिक्षा मिलती है?

उत्तर कुंजी

- लक्ष्मण की मूर्छा का कारण युद्ध में घायल होना था।
- राम ने हनुमान को तुरंत जाकर लक्ष्मण की सहायता करने का आदेश दिया।
- दोहा दो पंक्तियों का छंद होता है जबकि सोरठा चार पंक्तियों का होता है।
- राम के विलाप में गहरा दुःख, चिंता और प्रेम स्पष्ट होता है।
- हनुमान ने राम की सहायता के लिए तत्परता दिखाई।
- महत्वपूर्ण शब्दों जैसे 'तव' का अर्थ 'तुम्हारा', 'कपि' का अर्थ 'बंदर' होता है।
- राम और लक्ष्मण के बीच गहरा भाईचारा और समर्पण है।
- दोनों छंदों का प्रयोग भावों की अभिव्यक्ति को प्रभावी बनाता है।
- विलाप से हमें भाई-बहन के प्रेम और कर्तव्य की सीख मिलती है।

त्वरित संदर्भ

- लक्ष्मण की मूर्छा → युद्ध में घायल होना
- राम का विलाप → भावुकता और चिंता
- हनुमान की भूमिका → सहायता और सेवा
- दोहा और सोरठा → छंद के प्रकार
- प्रमुख शब्द → तव, कपि, बिपिन, आदि

शब्दावली

शब्द	अर्थ
कसब (किसबी)	धंधा
चेटकी	बाजीगर
तव	तुम्हारा, आपका
राखि	रखकर
जैहउँ	जाऊँगा
अस	इस तरह
आयसु	आज्ञा
महुँ	में

कपि	बंदर (यहाँ हनुमान के लिए प्रयुक्त)
सराहत	बड़ाई कर रहे हैं
मनुज अनुसारी	मानवोचित
काहू	किसी प्रकार
लागि	के लिए
तजहु	त्यागते हो
बिपिन	जंगल
आतप	धूप
बाता	हवा, तूफ़ान
जनतेउँ	यदि जानता
मनतेउँ	तो मानता
बित	धन
नारि	स्त्री, पत्नी (यहाँ पर पत्नी)
बारहिं बारा	बार-बार ही
जियँ	मन में
बिचारि	विचार कर
सहोदर	एक ही माँ की कोख से जन्मे
जथा	जैसे
दीना	दरिद्र
ताता	भाई के लिए संबोधन
मनि	नागमणि
फनि	साँप (यहाँ मणि-सर्प)
करिबर	हाथी
कर	सूँड़
मम	मेरा
बिनु तोही	तुम्हारे बिना

बरु	चाहे
अपजस	अपयश, कलंक
सहतेंउँ	सहना पड़ेगा
छति	क्षति, हानि
निठुर	निष्ठुर, हृदयहीन
तासु	उसके
मोहि	मुझे
पानी	हाथ
उत्तर काह देहउँ	क्या उत्तर दूँगा
सोच-बिमोचन	शोक को दूर करने वाला
स्रवत	बहते हैं
प्रलाप	तर्कहीन वचन-प्रवाह
निकर	समूह
हरषि	प्रसन्न होकर
भेटेउ	भेंट की, मिले
कृतग्य	कृतज्ञ
सुजाना	अच्छा ज्ञानी, समझदार
कीन्हि	किया
हरषाई	हर्षित
हृदयँ	हृदय में
जाता	समूह, झुंड
लइ आया	ले आए
सिर धुनेऊ	सिर धुनने लगा
पहिं	के पास
निसिचर	रात में घूमने वाला
हरि आनी	हरण कर लाए

जोधा	योद्धा
संघारे	मार डाले
सुररिपु	कड़े जोश वाला
दसकंधर	दशानन, रावण
महोदर	बड़े पेट वाला
अपर	दूसरा
भट	योद्धा
सठ	दुष्ट
रणधीर	युद्ध में अविचल रहने वाला